कक्षा - पाँच
विषय - हिन्दी
पाठ - 1 - राख की रस्सी



शब्दार्थ - हाजिरजवाबी - किसी बात का जवाब चतुराई से तुरंत देना।
होशियारी - चतुराई
हल - उपाय
आपबीती - अपने साथ घटी कोई घटना
यकीन - विश्वास
हाल - स्थिति
सिल - पत्थर का टुकड़ा
समेत - सहित
चकित - हैरान

प्र.1. (क) तिब्बत के मंत्री अपने बेटे के भोलेपन से चिंतित रहते थे। तुम्हारे विचार से वे किन-किन बातों के बारे में सोचकर परेशान होते थे?

उत्तर - हमारे विचार से वे यही सोचा कर परेशान होते थे कि मेरे मरने के बाद इस भोले-भाले का काम कैसे चलेगा? यह अपना जीवन किस तरह काट पायेगा?

प्र.(ख) - तुम तिब्बत के मंत्री की जगह होती तो क्या उपाय करती?

उत्तर - यदि मैं तिब्बत के मंत्री की जगह होती तो अपने बेटे को होशियार बनाने के लिए कई तरह की ज्ञान संबंधी कहानियाँ सुनाती

शहर की तरफ -

1. (क) मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ क्यों भेजा?

उत्तर - मंत्री का लड़का बहुत ही भोला भाला था, उसे समझदार एवं होशियार बनने के लिए शहर भेजा। क्योंकि उनका विश्वास था कि शहर जाने से अच्छे व्यक्तियों के मिलने से यह भी होशियार बन जायेगा।

Scanned with CamScanner

(ख)- उसने अपने बेटे को मोड़ों के साथ शहर में ही क्यों भेजा?
उत्तर - अपने बेटे को मोड़ों के साथ ही शहर इसलिए भेजा की उसका बेटा मोड़ों को माध्यम [illegible] बना कर होशियार बन सके।

2. गेहूँ — जौ
मक्का — बाजरा
चना

3.(क)

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा |
|---|---|
| लोह | धातु |
| शेरवानी | भोजन |
| ताँबा | शहर |
| खिचड़ी | वेशभूषा |

(ख) धातु - सोना, चाँदी, ताँबा
भोजन - दाल, चावल, रोटी
शहर - आगरा, पटना, दिल्ली
वेशभूषा - धोती, कमीज, साड़ी

बात को कहने के तरीके

(क) चैन से जिंदगी चल रही थी।
जिंदगी मजे से कट रही थी।

(ख) होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी।
वह थोड़ा भी समझदार नहीं था।

(ग) मैं इसका हल निकाल देती हूँ।
मैं इसका उपाय बता देती हूँ।

(घ) उनकी अपनी चतुराई किसी काम न आई।
Ans.

Scanned with CamScanner

1. लोनपो गार कौन थे?
उत्तर - लोनपो गार तिब्बत के बत्तीसवें राजा सोनगवसैन गांपो के मंत्री थे।

2. लोनपो गार का बेटा कैसा था?
उत्तर - उनका बेटा बहुत ही भोला भाला एवं सीधा-सादा था।

3. लोनपो गार किस लिए मशहूर थे?
उत्तर - लोनपो गार अपनी चालाकी और हाजिरजवाबी के के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे।

4. लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी का क्या किया?
उत्तर :- लड़की नौ हाथ लंबी रस्सी को एक पत्थर के टुकड़े पर रख कर उसे जला दिया।

5. राख की रस्सी को लोनपो गार के पास कौन ले गया?
उत्तर - राख की रस्सी को लोनपो गार के पास वह लड़की ले गई।

— x —

Scanned with CamScanner

## पाठ - 02 - फसलों का त्योहार

शब्दार्थ - अंदाजा - अनुमान | मौका - अवसर
गुजरना - बीत जाना | सुस्ताना - आराम करना
बोरसी - अंगीठी | इजहार - प्रकट
चकाचक - साफ-सुथरा | जश्न - उत्सव
फरमाइशी - पसंद | गंडेरी - गन्ने का टुकड़ा
आस - आशा | वाकई - वास्तव
कुनकुनाना - सिहरन होना | करीना - तरीका
सैर - टहलना | दाड़िम - अनार

प्रश्न: (1) भारत में फसलों से जुड़ा त्योहार कब मनाया जाता है?
उत्तर - भारत में फसलों से जुड़ा त्योहार जनवरी माह के मध्य में मनाया जाता है।

प्रश्न - (2) फसलों से जुड़े त्योहार कौन-कौन से हैं?
उत्तर - मकर-संक्रांति, बीहू, ओणम, पोंगल, लोहड़ी, सरहुल एवं पतंग का पर्व फसलों से जुड़े त्योहार हैं।

प्रश्न :- (3) "अप्पी दिदिया बुरी फँसी" कैसे?
उत्तर :- अप्पी दिदिया आज बुरी तरह फंस गई थी, क्योंकि सकरात का पर्व था। इस दिन चूड़ा-दही और खिचड़ी ही खाना पड़ता है, और ये दोनों ही उन्हें पसंद नहीं थे। वो प्रत्येक दिन अपने पसंद का फरमाइशी खाना ही खाती थी, लेकिन आज उन्हें जबरन ही ये दोनों चीजें खानी पड़ेंगी।

प्रश्न :- (4) - संथाल के लोग सरहुल कब और कैसे मनाते हैं?
उत्तर - संथाल के लोग सरहुल फरवरी-मार्च में मनाते हैं। इस दिन लोग साल के पेड़ की पूजा करते हैं, क्योंकि इसी समय साल के पेड़ों में फूल आने लगते हैं, और मौसम बहुत ही खुशनुमा हो जाता है। स्त्री-पुरुष दोनों ही ढोल मंजीरे लेकर रात भर नाचते गाते हैं। दूसरे दिन घर-घर जा कर फूल का पौधा —

P.T.O.

लगाते एवं चंदा के रुप में उन घरों से मुर्गी, चावल और मिर्ची लेते हैं। ये मुर्गी चावल खाते हैं, नाचते-गाते और मौज मस्ती करते हैं। तीसरे दिन पूजा होती है, पूजा के बाद लोग अपने कान में सरई का फूल लगाते हैं।

प्रश्न-⑤ संथाल तथा ओरांव लोग सरहुल त्योहार को कब मनाते हैं?

उत्तर:- संथाल लोग इसे फरवरी-मार्च में तथा ओरांव लोग इसे मार्च-अप्रैल में मनाते हैं।

प्रश्न ⑥- मकर संक्रांति के दिन तिल को किस रुप में प्रयोग करते हैं?

उत्तर- मकर संक्रांति के दिन लोग पानी में तिल डालकर स्नान करते, आग में तिल डालते, तिल के पकवान बनाते, तिल दान करते तथा तिल खाने के रुप में प्रयोग करते हैं।

—x—

Scanned with CamScanner

हिन्दी
कक्षा - पाँच
पाठ - 03 · खिलौनेवाला



शब्दार्थ : पिंजड़ा - पिंजरा — ताड़का - एक राक्षसी
भली - भोली-भाली — रूठना - नाराज होना
मचलना - जिद करना — अम्मा - माता माँ

भावार्थ :

वह देखो माँ ------------- सर-सर-सर चलने वाली
खिलौने बेचने वाले को देख कर एक बच्चा अपनी माँ से खिलौने वाले के खिलौनों के बारे में बताते हुए कहता है - माँ देखो आज फिर वह खिलौनेवाला आया है। उसके पास आज सुन्दर एवं नए खिलौने हैं। वह देखो माँ हरे रंग का तोता, एक पैसे वाली गेंद, एक छोटी सी मोटरकार है जो सर-सर की आवाज करते चलती है।

सीटी भी है ------------- लोटा - थाली।
बच्चा ~~और~~ दूसरे खिलौनों की ओर इशारा करते हुए माँ से कहता है - उसके पास कई तरह की सीटियाँ भी हैं, चाभी से चलने वाली रेल, तथा एक भोली भाली गुड़िया भी है जो अपने कानों में बाली पहनी हुई है। उसके पास ~~~~ छोटे-छोटे लोटा-थाली एवं छोटा सा टी-सेट भी है।

छोटे-छोटे धनुष ------------- लेने को साड़ी।
खिलौने वाले के पास और भी तरह के खिलौने हैं जैसे - छोटे-छोटे धनुष-बाण और तलवार। खिलौने वाला जोर-जोर से चिल्ला कर पुकार रहा है, खिलौने ले लो-

खिलौने ले लो भैया। मोहन ने मोटर तथा सुनु ने गुड़िया खरीदी है। सरला अपनी माँ से साड़ी लेने की जिद कर रही है।

कमी खिलौनेवाला ..... मन में करो विचार।
बच्चा अपनी माँ से कहता है कि माँ, क्या खिलौनेवाले भी कभी साड़ी बेचते हैं? साड़ी तो कपड़े बेचने वाले बेचते हैं। माँ पुनः अपनी माँ से कहता है कि तुमने मुझे चार पैसे दिए हैं, अब तुम ही बताओ मैं इनमें से कौन खिलौना ले लूँ।

तुम सोचोगी ..... मारूँगा राम समान।
बच्चा माँ से कहता है कि तुम यदि यह सोचती हो कि मैं तोता, बिल्ली, मोटर या रेल लूँ, तो नहीं मैं ये नहीं लूँगा, क्योंकि इन सारे खिलौनों से तो बच्चे खेलते हैं। मैं तो धनुष-बाण या तलवार लूँगा, ताकि वन में जा कर राम की तरह ताड़का जैसी राक्षसी का वध कर सकूँ।

तपस्वी यज्ञ करेंगे ..... हँसते-हँसते जाऊँगा।
बच्चा अपनी माँ से कहता है कि मैं धनुष-बाण से राक्षसों को मार भगाऊँगा, जिससे तपस्वी अपनी तपस्या एवं यज्ञ शांतिपूर्ण ढंग से कर सकें। इसी तरह मैं असुरों का नाश करते हुए श्री रामचंद्र जैसा बनना चाहता हूँ। और जब मैं रामचन्द्र बन जाऊँगा तो तुम्हें कौशल्या माँ बनाऊँगा। माँ यदि तुम मुझे वन में जाने के लिए भी कहोगी तो मैं हँसते-हँसते चला जाऊँगा।

Scanned with CamScanner

पर माँ, बिना तुम्हारे ---------- मनचाही चीजें देगा।
इन पंक्तियों में बच्चा अपनी माता से दूर होने की बात सोचकर माता से कहता है- माँ, मैं तुम्हारे बिना जंगल में किस तरह रहूँगा। दिन भर इधर-उधर भटकने के बाद रात में कहाँ जाऊँगा। वहाँ मैं किसे पैसे लूँगा? कौन मुझ से प्यार करेगा? कौन मुझे अपनी गोद में बैठाएगा? रोने पर मुझे कौन मनायेगा

प्रश्न-उत्तर:-

प्रश्न: ① रामचंद्र की कौन सी अच्छी लगी?

उत्तर:- श्री रामचंद्र जी एक आज्ञाकारी पुत्र थे। पिता के वचन का पालन कर उनके सम्मान की रक्षा करने के लिए वे वन में चले गए। उनकी बातें मुझे बहुत अच्छी लगी।

प्रश्न-② ऐसे त्योहारों के बारे में बताएँ जो बुराई पर अच्छाई की जीत पर बल देता है।

उत्तर- वैसे तो कई त्योहार हैं जो बुराई पर अच्छाई की जीत पर बल देता है, परन्तु सबसे प्रमुख त्योहार दशहरा है। इस दिन रामचंद्र ने अत्याचारी रावण पर विजय प्राप्त की।

प्रश्न-③ बच्चा माँ के बिना जंगल में क्यों नहीं जाना चाहता था?

उत्तर:- बच्चा माँ के बिना जंगल में इसलिए नहीं जाना चाहता था, क्योंकि वह सोचता था कि दिन भर जंगल में भटकने के बाद रात में किसके पास जाएगा? जंगल में उसे पैसे कौन देगा? उसे गोद में बिठा कर प्यार-दुलार कौन करेगा।

Scanned with CamScanner

खेल-खिलौने

2. संज्ञा शब्द - पाना, रात, दादी, बिल्ली
क्रिया - बोलना
क्रिया विशेषण - ऊपर
विशेषण - पाँच

~~लहानी~~
कविता में कथा

उत्तर 1. (क) ये तीनों नाम 'राम कथा' के पात्र हैं।
(ख) बच्चा अपनी माँ से अलग नहीं होना चाहता। वह भी रामचन्द्र की तरह ही माँ के पास ही रहना चाहता है।

# हिन्दी

## पाठ - 04 - नन्हा फनकार

**शब्दार्थ -**

फनकार - कलाकार
जुटना - लगाना
उकेरना - नक्काशी करना
नक्काशी - पत्थर, लकड़ी पर चित्र बनाना
किरचें - नुकीला बुरादा
छितरा जाना - बिखर जाना
संगतराश - पत्थर पर नक्काशी करने वाले
नफीस - बढ़िया
इठलाना - इतराना
पुश्तैनी - खानदानी
माशा-अल्लाह - बहुत अच्छा
तलखी - कड़वाहट
मँझोला - मझला, बीच का
त्यौरियाँ चढ़ना - गुस्से में आना
शिल्पकार - नक्काशी करने वाला
उनींदी - नींद से भरी हुई

अँगरखा - पुरुषों की लम्बी पोशाक (एक प्रकार की लम्बी पुरुषों की पोशाक)
मुआयना - अच्छी तरह देखना
भौंचक - हैरान
जुर्रत - हिम्मत
माथा ठनका - समझ आना
बदहवासी - घबराहट
कातर - सहमा हुआ
दखलंदाजी - बीच में आना
असमंजस - दुविधा, संदेहात्मक स्थिति
उलझन - दुविधा
फुर्ती - चुस्ती
अनमना - उदास
धाक - रौब
सल्तनत - साम्राज्य
टिकाकर - रख कर
लाडला - प्यारा

**कहानी से -**

प्रश्न - (3) अकबर को पहरेदार की दखलंदाजी अच्छी क्यों नहीं लगी?

उत्तर - बादशाह अकबर, केशव के सामने अपने आप को बादशाह की तरह नहीं पेश आना चाहते थे। वे एक साधारण व्यक्ति की तरह केशव से बात करना चाहते थे। लेकिन जब पहरेदार वहाँ पहुँच कर केशव को डाँटा-फटकारा तो केशव डर गया। जब वह जान गया कि मैं जिस व्यक्ति से बात कर रहा हूँ, वे बादशाह हैं, तब बड़ा असमंजस में पड़ गया।

बादशाह को यह बात अच्छी नहीं लगी कि उनकी प्रजा

को उनके कर्मचारी डरायें धमकाएँ।

प्रश्न ④ "लगता है कोई बहुत बड़ा आदमी है," यहाँ पर "बड़े-आदमी" से केशव का क्या मतलब है?

उत्तर - "बड़े आदमी" से केशव का मतलब है प्रतिष्ठित एवं धनवान व्यक्ति। चूँकि केशव ने कभी भी बादशाह अकबर को देखा नहीं था। केशव के सामने जब बादशाह आए तो उनके पोशाक, पगड़ी, मोतियों की माला तथा उंगलियों में कीमती अंगूठियों को देखकर अनुमान लगाया कि ये धनवान व्यक्ति हैं।

प्रश्न ⑤ - - -

उत्तर - (i) गीदड़ जैसा कायर (ii) मोरनी जैसी गर्दन (iii) कछुए - जैसी चाल (iv) लोमड़ी जैसा चालाक

प्रश्न ⑥ अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाहा, तो केशव ने उन्हें संदेहभरी नजरों से क्यों देखा?

उत्तर - बादशाह अकबर ने जब नक्काशी सीखना चाहा तो केशव बड़ा ही संकोच में पड़ गया। वह मन ही मन सोचने लगा कि इतने बड़े आदमी यह छोटा काम कैसे और किस लिए सीखना चाहते हैं? और वह भी मेरे जैसे छोटे कलाकार से। केशव को लगा कि कहीं बादशाह उससे मजाक तो नहीं कर रहे हैं?

प्रश्न - ⑦ - केशव दस साल का है। क्या उसकी उम्र के बच्चों का इस तरह के काम से जुड़ना ठीक है? अपने उत्तर के कारण बताओ।

उत्तर - सरकार ने बाल-मजदूरी पर प्रतिबंध लगा रखा है। चूँकि केशव भी दस साल का ही है अतः वह भी बाल-मजदूर

Scanned with CamScanner

कहलाएगा। बच्चों से काम लेना अनुचित है।

इसका कारण यह है कि बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, जिससे उनकी शारीरिक तथा मानसिक विकास नहीं हो पाता है। और उनकी पढ़ाई नहीं हो पाती है।

प्रश्न (8) "केशव बार-बार सबको सुनाता।" केशव सबसे क्या कहता होगा? कल्पना करके केशव के शब्दों में लिखो।

उत्तर – जब बादशाह केशव से मिलने आये तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपने आप को बहुत खुशनसीब समझ रहा था। इसी की चर्चा अपने दोस्तों से बार-बार कहता कि मुझ से मिलने बादशाह आए थे, उन्होंने मेरी नक्काशी की तारीफ की तथा मुझसे नक्काशी का काम भी सीखना चाहा।

शब्दों की निराली दुनिया:-

उत्तर (2) - संज्ञा - क्रिया

| संज्ञा | क्रिया | |
|---|---|---|
| चुनाव | चुन | हमें अच्छी पुस्तकों का चुनाव करना चाहिए |
| पड़ाव | पड़ | बच्चे वाक्य खुद बनाएँ |
| बहाव | बह | |
| लगाव | लग | |

3. उत्तर – बुदबुदाना का अर्थ है मन-ही-मन कुछ बोलना जबकि फुसफुसाना, बड़बड़ाना, तथा भुनभुना में कुछ आवाज बाहर निकल ही जाती है।

नोट- फुसफुसाना, बड़बड़ाना तथा भुनभुना से वाक्य बच्चे खुद बनायें।

4. उत्तर – (ख) पहरेदार यह कह कर अपनी वफादारी दिखाना चाहता था।

Scanned with CamScanner

हिन्दी

# पाठ - 5 - जहाँ चाह वहाँ राह

**शब्दार्थ:**

मलमली → मुलायम

कसूती → कर्नाटक की एक प्रकार की कढ़ाई

पल्लू = आँचल

मिसाल → उदाहरण

अनूठी → विचित्र

आड़ी-तिरछी - टेढ़ी-मेढ़ी

पिट्ठू → पत्थर के टुकड़े

निंबौरी → नीम का फल

विश्वास - भरोसा

कुदरत - प्रकृति

परिधान - वस्त्र

डिजाइन - आकृति

आइयो - आओ

पेंग - झूला - झूलना

विष-अमृत - बच्चों का खेल

दंग रह जाना - हैरान रह जाना

घुटने टेकना - हार मानना

अतिरिक्त - अलावा

काशीदाकारी - कढ़ाई

ठान लेना - पक्का इरादा करना

थामना - पकड़ना

धैर्य - धीरज

माहिर - कुशल, निपुण

कांथा - बंगाल की एक तरह की कढ़ाई

प्रश्न -① इला या इला जैसी कोई लड़की यदि तुम्हारी कक्षा में दाखिला ले लेती तो तुम्हारे मन में कौन-कौन से प्रश्न उठते?

उत्तर - यदि इला जैसी विकलांग लड़की हमारी कक्षा में नामांकन करवाती तो हम सभी के मन में तरह-तरह के विचार उठती - जैसे कि यह बिना हाथ के सारी चीजों को कैसे कर पाती होगी? कैसे खाना खाती होगी? इसकी दिनचर्या कैसी होती होगी? ये कहीं आती जाती होगी तो इसे कितनी परेशानी होती होगी?

प्रश्न -② इस लेख को पढ़ने के बाद क्या तुम्हारी सोच में कुछ बदलाव आए?

उत्तर - इस लेख को पढ़ कर, इला के काम करने के ढंग को देख कर मुझे ऐसा लगा कि इला के हाथ काम नहीं

Scanned with CamScanner

कर रहे थे, फिर भी उसे यह कमी महसूस नहीं हुआ वे अपने को सामान्य ही समझती रही। मैं पहले सोचा करता था कि ऐसे बच्चे समाज पर बोझ होते हैं, वे अपना काम स्वयं नहीं करते बल्कि दूसरों पर निर्भर होते हैं। लेकिन इला ने साबित कर दिया कि वे किसी पर निर्भर नहीं हैं। इला ने हमारे सोच को बदल दिया। अतः हमें ऐसी बच्चों का मजाक नहीं उड़ानी चाहिए बल्कि उनकी मदद करनी चाहिए।

प्यारी इला-

प्रश्न :- इला के बारे में पढ़ कर तुम्हारे मन जैसे भाव उठ रहे हैं उन्हें इला को पत्र लिख कर बताओ।

उत्तर —

स्थान -

ता: -

प्रिय इला

नमस्कार

मैं यहाँ ठीक हूँ, आशा है तुम भी वहाँ ठीक से होगी। मैं तुम्हारे बारे में पढ़ा, पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम किस प्रकार अपने काम को करती हो। मुझे तुम पर गर्व है। तुमने अपने कारनामों से सिर्फ मेरी नहीं सारी दुनिया की आँखें खोल दी कि अगर व्यक्ति मन में कुछ निर्णय कर ले तो वह अपने लक्ष्य को पा सकता है। चाहे कितनी भी बाधा या परेशानी आए।

मैं समझती हूँ कि आज तुम जिस स्थिति में हो उस स्थिति तक पहुँचने में तुम्हें कितनी परेशानी हुई होगी। कई लोग तुम्हें हँसी का पात्र भी बनाया

Scanned with CamScanner

होगा लेकिन तुमने किसी बात की परवाह न करते हुए आगे बढ़ी और लक्ष्य प्राप्त किया। इसके लिए तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद।

यहाँ पत्र समाप्त करती हूँ।

तुम्हारी —

पत्र —

—x—

सवाल हमारे, जवाब तुम्हारे —

प्रश्न -① इला को लेकर स्कूल वाले चिंतित क्यों थे? क्या उनका चिंता करना सही था या नहीं?

उत्तर – इला नाम की लड़की का नामांकन विद्यालय में हो गया था, वह बेचारी विकलांग थी। फलतः विद्यालय प्रशासन काफी चिंतित हो गया कि इस लड़की के लिए क्या कुछ उपाय किया जाए ताकि इसे कोई तकलीफ न हो। क्योंकि विद्यालय में पहले से ऐसा विकलांग बच्चा नहीं था।

प्रश्न -② इला की काशीदाकारी में खास बात क्या थी?

उत्तर - इला हाथ से विकलांग होते हुए भी पैर से बहुत सुन्दर काशीदा काढ़ती थी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि किस कपड़े पर किस प्रकार की कढ़ाई की जाए? रंगों का ताल मेल बहुत अच्छी तरह करती थी। ताकि उसकी द्वारा बनायी गई काशीदा अच्छी लगे। वह बहुत तरह की काशीदा काढ़ती

Scanned with CamScanner

थी। वह काठियावाड़ी टांकों के साथ और भी कई तरह के टांकों का इस्तेमाल करती थी। पत्तियों को चिकनकारी से सजाती, डंडियों को कांथा से उभारती। पशु-पक्षियों की आकृतियों को जंजीर और कसूती से उठाती थी। जो बहुत ही सुन्दर लगते थे।

उत्तर -(3) - इला दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर सकी, क्योंकि — लिखने की गति धीमी होने के कारण वह प्रश्न-पत्र पूरे नहीं कर पाती थी।

4. प्रश्न – क्या इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते।

उत्तर – यदि इला को विकलांग समझ कर उसके आस-पास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसे कुछ करने नहीं देते, तो ~~वह~~ आज इला के पास जो काशीदाकारी है। वह कभी नहीं सीख पाती।

काशीदाकारी -

1. उत्तर(क) परिधान, बूटियाँ, सूई, टाँके, बेलबूटे, कांथा, कसूती आदि

उत्तर (ख) फुटबॉल - गेंद, मैदान, रेफरी, खिलाड़ी, सीटी आदि।

कुनाई — कढ़ाई, जंजीर, टाँके, कांथा, कसूती, सूई, धागा आदि

Scanned with CamScanner

कक्षा - पाँच
हिन्दी

# पाठ - 06 - चिट्ठी का सफर

शब्दार्थ :-

पत्र - चिट्ठी, खत
भिन्न - अलग
गंतव्य - जहाँ पहुँचना हो
कर्मचारी - काम करनेवाले व्यक्ति
परिवहन - आने जाने के साधन
(जैसे - बस, रेलगाड़ी आदि)
सीमित - कम, थोड़ा
उपलब्ध - प्राप्त
प्रशिक्षित करना - सिखाना
शौक - रुचि, इच्छा
भौगोलिक - भूगोल से संबंधित
जाहिर होना - मालूम होना
निरंतर - लगातार
हरकारा - संदेश पहुँचाने वाला
बेहद - जिसकी कोई सीमा न हो, बहुत ज्यादा
दुर्गम - जहाँ पहुँचना कठिन हो।
दिलचस्प - रुचि रखना
आखिर - अंत
प्रवासी - जो अपने जन्म स्थान को छोड़कर अन्य स्थान पर रहने लगे

प्रश्न :- (1) गाँधी जी को सिर्फ उनके नाम और देश के नाम के सहारे पत्र कैसे पहुँच गया होगा?
उत्तर :- गाँधी जी विश्व प्रसिद्ध व्यक्ति तथा भारत के राष्ट्रपिता थे। इसलिए वे जहाँ कहीं भी जाते थे उसकी जानकारी सभी सरकारी विभाग को होती थी। फलतः उनके नाम तथा देश के नाम से ही उनके पास पत्र पहुँच जाता होगा।
प्रश्न (2) अगर रजक पत्र में पते के साथ किसी का नाम हो तो क्या पत्र ठीक जगह पर पहुँच जाएगा?
उत्तर - अगर व्यक्ति का नाम पता सही लिखा हो तो पत्र आसानी से उस व्यक्ति, स्थान तक पहुँच जाएगा।
प्रश्न - (3) नाम न होने से क्या समस्याएँ आ सकती हैं?
उत्तर - यदि पत्र में नाम न हो तो वह पत्र उस व्यक्ति तक नहीं पहुँच पायेगा

Scanned with CamScanner

प्रश्न - (4) पैदल हरकारों को किस-किस तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता होगा ?

उत्तर - पैदल हरकारों को बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे हर मौसम में चाहे कड़ाके की ठंड हो, गर्मी में लू तथा वर्षात में भी अपने काम को समय पर करना होता है। गाँवों की तरफ जहाँ सड़कें अच्छी नहीं होती वहाँ भी उन्हें जाना होता है। इसके अलावा चोर-लुटेरों से भी उनका सामना हो जाता है।

(5) उत्तर - अगर हमें किसी के पास चिट्ठी भेजनी हो तो पता निम्न प्रकार से लिखेंगे :-

(i) घर का नम्बर, गली/मोहल्ले का नाम
(ii) खंड का नाम, कस्बे/शहर/गाँव का नाम
(iii) जनपद (जिला) का नाम, राज्य का नाम

नोट - पत्र पर पता लिखते समय छोटी भौगोलिक इकाई से शुरु कर बड़ी भौगोलिक इकाई की तरफ बढ़ना चाहिए।

प्रश्न संख्या - 6, 7, 8 बच्चे स्वयं करें।

—x—

Scanned with CamScanner

हिन्दी

पाठ - 07 - डाकिए की कहानी, कँवर सिंह की ज़ुबानी

शब्दार्थ :-

गुनगुनी धूप - हल्की धूप
निवासी - रहने वाला
पेंशन - नौकरी समाप्त हो जाने के बाद मिलने वाली मासिकराशि
सम्मान - इज्जत
बर्फ़बारी - बर्फ़ गिरना
प्रमोशन - तरक्की
असाधारण - विशेष
पैकर - डाक बाँटने वाला
जरिया - माध्यम
मुख्यालय - प्रधान कार्यालय
इम्तिहान - परीक्षा
रिटायर - सेवामुक्त

प्रश्न-① शिमला के किस रोड़ पर जनरल पोस्ट ऑफिस स्थित है?
उत्तर - शिमला के माल रोड़ पर जनरल पोस्ट ऑफिस है।

प्रश्न -② सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिए का क्या नाम है? वह कहाँ का रहने वाला है?
उत्तर - सरकार से पुरस्कार पाने वाले डाकिए का नाम कँवर सिंह है, वह शिमला जिले के नेरवा गाँव का रहने वाला है।

प्रश्न -③ कँवर सिंह पहले क्या काम करता था और अब वह क्या काम करने लगा?
उत्तर - कँवर सिंह पहले ग्रामीण डाक सेवक था, और अब वह रनर पैकर है।

प्रश्न -④ डाक सेवक को क्या-क्या काम करना पड़ता है?
उत्तर - डाक सेवक को चिट्ठियाँ, रजिस्टरी-पत्र, पार्सल, बिल, वृद्धा पेंशन पहुँचाने गाँव-गाँव जाना पड़ता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

प्रश्न-⑤ आज शहरों में संदेश देने के कौन-कौन से साधन आ गए हैं? गाँव में संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा ज़रिया क्या है?

उत्तर - शहरों में संदेश पहुँचाने के लिए फोन, मोबाइल, ई-मेल आदि का प्रयोग कर रहे हैं। वहीं गाँव में संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा जरिया डाक सेवा है।

प्रश्न-⑥ भारतीय डाक सेवा की क्या विशेषता है?

उत्तर- भारतीय डाक सेवा दुनिया की सबसे बड़ी और सस्ती डाक सेवा है।

प्रश्न-⑦ कँवर सिंह को "बेस्ट पोस्टमैन" का इनाम क्यों, कब तथा इनाम में क्या मिला?

उत्तर - कँवर सिंह को अपनी जान पर खेल कर डाक की चीजें बचाने के लिए "बेस्ट पोस्टमैन" का इनाम 2004 में मिला। इस इनाम में 500/-रुपये तथा प्रशस्ति पत्र मिला।

—x—

अप्रैल

## वर्ण

वर्ण – वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिनके खंड या टुकड़े नहीं किये जा सकते हैं।
जैसे :- अ, आ, इ, ई, क्, ख्, च्, छ् आदि।

वर्ण के दो भेद होते हैं:-
(क) स्वर वर्ण (ख) व्यंजन वर्ण

(क) स्वर वर्ण :→ जिन वर्णों के उच्चारण में दूसरे वर्णों की सहायता नहीं ली जाती है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं।
जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ,

स्वर वर्ण के तीन भेद होते हैं:-
(i) ह्रस्व स्वर (ii) दीर्घ स्वर (iii) प्लुत स्वर

(i) ह्रस्व स्वर :→ जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगता है। उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है।
जैसे - अ, इ, उ, ऋ आदि

(ii) दीर्घ स्वर :- (संयुक्त स्वर) → जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दुगना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।
जैसे:- आ, ई, ऊ, ए, ऐ आदि

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(iii) प्लुत स्वर :- जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दुगुना समय से भी अधिक समय लगता है उसे प्लुत स्वर कहते हैं।

जैसे :- ओ३म्, श्री३

(ख) व्यंजन वर्ण :- स्वर वर्ण की सहायता से जिस वर्ण का उच्चारण होता है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं।

जैसे :- क् + अ = क
म् + अ = म इत्यादि

व्यंजन वर्ण के तीन भेद है :-

(i) स्पर्श व्यंजन :→ जिन वर्णों का उच्चारण कंठ, तालु मूर्धा, दंत, एवं, ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

जैसे - क - ङ (वर्ग) - कंठ से
च - ञ (वर्ग) - तालु से
ट - ण - मूर्धा से
त - न - दन्त से
प - म - ओष्ठ से

(ii) ऊष्म व्यंजन :- जिन वर्णों का उच्चारण रगड़ या घर्षण से उत्पन्न गर्म वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं।

जैसे - श, ष, स, ह।

Scanned with CamScanner

(iii) अंतःस्थ व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण कंठ, तालु मूर्धा के स्पर्श से होता है उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं।

जैसे - य, र, ल, व

इन व्यंजनों के अतिरिक्त और भी व्यंजन हैं जो निम्न हैं :-

संयुक्त व्यंजन :- दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

जैसे :- क् + ष = क्ष , त् + र = त्र , श् + र = श्र

ज् + ञ = ज्ञ

द्वित्व व्यंजन :- दो समान व्यंजन के मेल को द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

जैसे :- क् + क = क्क : चक्का

त् + त : त्त = कुत्ता

न् + न = न्न : अन्ना

संयुक्त स्वर :- जब एक या एक से अधिक स्वर रहित व्यंजन किसी स्वर सहित व्यंजन से मिलते हैं तब वे संयुक्ताक्षर कहलाते हैं।

जैसे - क् + त = क्त : वक्त

म् + ल = म्ल : अम्ल

Scanned with CamScanner

# ध्वनि

मुँह के विभिन्न हिस्सों या उच्चारण स्थान से जो वर्ण या वर्णों के समूह का उच्चारण होता है, उसे ध्वनि कहते हैं।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि यदि उच्चारित ध्वनि कुछ अर्थ प्रकट करे तो वह ध्वनि व्याकरण की दृष्टि से ध्वनि है, यदि उसका कोई अर्थ न हो तो वह निरर्थक ध्वनि कहलाती है।

मौखिक भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है।

Scanned with CamScanner

# व्याकरण

## शब्द

शब्द :- वर्णों या अक्षरों के उस सार्थक समूह को शब्द कहते हैं जिसका कुछ न कुछ निश्चित अर्थ होता है।
जैसे - बालक, हार, पहाड़, नदी, गाय आदि।

### शब्द के भेद

अर्थ के विचार से शब्द के दो भेद होते हैं:-
(क) सार्थक शब्द
(ख) निरर्थक शब्द

(क) सार्थक शब्द :- सार्थक वे शब्द हैं, जिनका कोई निश्चित अर्थ होता है।
जैसे - लोटा, पानी, साड़ी, रोटी आदि
(ख) निरर्थक शब्द :- निरर्थक वे शब्द हैं जिनका कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है।
जैसे - तीरो, ड़ाधो, नीपा, ड़ीसा आदि

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं:-
(क) रूढ़ - जो शब्द परम्परा (पहले) से ही किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते चले आ रहे हैं और इनका कोई भी खण्ड सार्थक नहीं होता है।
जैसे - हार, नाक, फल, घोड़ा आदि
फ + ल। इसका कोई खण्ड सार्थक नहीं है।

(ख) यौगिक :- यौगिक उन शब्दों को कहते हैं जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने होते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

जैसे:- देवालय, पाठशाला, हिमालय आदि

देव + आलय । इसके दोनों खण्डों का अर्थ निकलता है।
देव का अर्थ देवता तथा आलय का अर्थ - स्थान

(ग) योगरूढ़:- ऐसे यौगिक शब्द जो अपने सामान्य शाब्दिक अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, वे योगरूढ़ कहलाते हैं।

जैसे- लम्बोदर, पंकज, वीणापाणी, आदि

| उदाहरण- योगरूढ़ शब्द | साधारण शब्द | विशेष अर्थ |
|---|---|---|
| लम्बोदर | लम्बे पेट वाला | गणेश |
| पंकज | कीचड़ में जनमा | कमल |

उत्पत्ति के विचार से शब्द के चार भेद होते हैं:-

(क) तत्सम - संस्कृत के वे मूल शब्द, जो ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम कहलाते हैं।

जैसे- पुष्प, पत्र, सत्य, अग्नि आदि

(ख) तद्भव:- संस्कृत के ऐसे शब्द जो हिन्दी में रूप बदलकर प्रयुक्त होते हैं, तद्भव कहलाते हैं।

जैसे- आग, रात, माई, फूल आदि

(ग) देशज - अपने ही देश की बोल-चाल से आए शब्द, देशज कहलाते हैं।

जैसे- कुदाल, मक्का, चौकी, पगड़ी आदि

(घ) विदेशज - विदेशी भाषा से आए शब्द, जिनका हिन्दी में प्रयोग होता है, विदेशज कहलाते हैं।

जैसे- स्टेशन, अदालत, आदमी, चाय आदि
(अंग्रेजी) (अरबी) (फारसी) (चीनी) भाषा

रूपान्तर के आधार पर शब्द के दो भेद हैं:-

(क) विकारी शब्द:- जो शब्द लिंग, वचन, पुरुष और कारक →

के अनुसार अपने रूप बदलते हैं, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। ऐसे शब्द हैं:-
संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया

(ख) अविकारी शब्द:- जो शब्द लिंग, वचन, पुरुष और कारक के अनुसार अपने रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं।

—*—

## वचन

वचन - वचन का अर्थ होता है - बोली, लेकिन हिन्दी व्याकरण में वचन संख्या का बोध कराता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
जैसे - लड़का, लड़की, कुत्ता, मैं आदि - एक का बोध
लड़के, लड़कियाँ, कुत्ते, हम आदि - अनेक का बोध

वचन के दो भेद होते हैं:-
(क) एकवचन
(ख) बहुवचन
(क) एकवचन:- शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे - लड़का, कलम, मैं आदि
(ख) बहुवचन:- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।
जैसे - लड़के, कलमें, हम आदि

Scanned with CamScanner

# हिन्दी व्याकरण

## कक्षा - VI

## संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- सोहन, पुस्तक, पटना, बुढ़ापा आदि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं:-

(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा:- जो संज्ञा शब्द किसी खास व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के नाम का बोध कराता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - रामायण, ताजमहल, मोहन आदि।

(ii) जातिवाचक संज्ञा:- जो संज्ञा शब्द किसी प्राणी, वस्तु अथवा पदार्थ की पूरी जाति का बोध कराता है उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- लड़की, गाय, बकरी, इत्यादि।

(iii) भाववाचक संज्ञा:- जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का गुण-दोष, स्वभाव, अवस्था, भाव आदि का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- बुढ़ापा, बचपना, मिठास आदि

(iv) समूह वाचक संज्ञा:- जिस संज्ञा शब्द से वस्तु या व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूह वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - मेला, सेना, विद्यालय, बाजार आदि।

(v) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा से नापने या तौलने वाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- सोना, चाँदी, दूध, तेल, कपड़ा, चावल आदि

Scanned with CamScanner

व्याकरण

# सर्वनाम
# PRONOUN

सर्वनाम - संज्ञा के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं।

हिन्दी में ग्यारह सर्वनाम हैं:- मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कौन, कोई, कुछ, क्या।

इन्हीं सर्वनाम से और भी सर्वनाम बनते हैं:-

| | | |
|---|---|---|
| मैं - मेरा | तुम - तुम्हारा | वह - उस, इसका, उसको |
| हम - हमारा | आप - आपका | |

सर्वनाम के छः भेद होते हैं:-

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम → जिस सर्वनाम से बोलने वाले, सुननेवाले और जिसके बारे में कहा जाए उसका बोध हो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे - मैं, मेरे, हमलोग, आप, आपको, उसका, उसकी आदि

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं-

(i) उत्तम पुरुष - कहनेवाला अपने लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं
जैसे - मैं, मैंने, हम, हमने, मेरा, मेरी, हमारा, हमारी आदि

(ii) मध्यम पुरुष: जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग सुननेवाला के लिए किया जाता है उसे मध्यम पुरुष कहते हैं।

जैसे - तू, तुम, आप, तुमलोग, आपलोग, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, आपका, आपकी, आपके आदि

Scanned with CamScanner

(iii) अन्य पुरुष – जिसके विषय में बात की जाती है उसे अन्यपुरुष कहते हैं।
जैसे – यह, वह, वे, ये, जो, सो, कुछ, कौन, क्या, कोई आदि

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम :– जो सर्वनाम नजदीक या दूर किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं उन्हें निश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – यह कलम मेरी है। वह तुम्हारी गाय है।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम :– जिस सर्वनाम से अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – कोई आ रहा है, दाल में कुछ है।

(4) संबंधवाचक सर्वनाम :– जो सर्वनाम प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्यों में आये संज्ञा या सर्वनाम से संबंध जोड़ता है उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – जो ---- सो जहाँ – वहाँ जैसी – वैसी
जिसकी ---- उसकी जैसा – वैसा आदि

उदा० – जो सोता है सो खोता है। जैसी करनी वैसी भरनी

(5) निजवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।
उदा० – मैं स्वयं चला जाऊँगा।
मैं अपना काम आप ही करता हूँ।

Scanned with CamScanner

⑥ प्रश्नवाचक सर्वनाम - जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदा० - कौन, क्या, कहाँ।

नोट - कौन का प्रयोग प्रायः प्राणी के लिए तथा क्या का प्रयोग किसी वस्तु के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण PAGE-01

विशेषण

विशेषण - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, रंग, दशा, आकार आदि) बतलाए उसे विशेषण है।

जैसे - वह सुन्दर है। - गुण
वह कुरूप है। - दोष
चार लड़के पढ़ रहे हैं। - संख्या
थोड़ा खा लो। - थोड़ा
फूल पीला है। - पीला

विशेषण के चार भेद होते हैं -

1. गुणवाचक विशेषण - जिस विशेषण शब्द से गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - अच्छा, बुरा, काला, बूढ़ा, जवान, सुबह आदि

2. संख्या वाचक विशेषण :- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं उसे संख्या-वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - एक गाय, पाँच कलमें, कुछ, थोड़ा आदि
संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं :-
(क) निश्चित संख्या वाचक विशेषण :- जिस विशेषण से निश्चित संख्या का बोध होता है, उसे निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - चार आदमी, दो केला, एक दर्जन अंडे आदि

(ख) अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण - जिस विशेषण -

P.T.O.

शब्द से निश्चित संख्या का बोध नहीं हो उसे अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - कुछ लड़के, बहुत लोग, सभी बच्चे - आदि

3. परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण किसी वस्तु की माप-तौल या मात्रा का बोध कराता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
जैसे - थोड़ी चीनी, किलो भर चावल, एक मीटर कपड़ा आदि

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं :-
(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण निश्चित परिमाण का बोध कराता है उसे निश्चित परिमाण-वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - एक किलो चावल, पाँच मीटर कपड़ा आदि

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण अनिश्चित परिमाण का बोध कराते हैं उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - थोड़ा चावल, कुछ दूध आदि

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयोग किये जाते हैं वे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
जैसे - यह, वह, कौन, कुछ, क्या आदि।

Scanned with CamScanner

प्रविशेषण :- विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।
जैसे - थोड़ा, बहुत, अधिक, अत्यधिक, ठीक आदि

उदाहरण - दूध मीठा है। - मीठा विशेषण
दूध बहुत मीठा है। - बहुत प्रविशेषण

विशेष्य :- जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतायी जाती है उस संज्ञा या सर्वनाम को विशेष्य कहते हैं।

या

जिसकी विशेषता बतायी जाए उसे विशेष्य कहते हैं।

जैसे - लड़का तेज है।
इसमें तेज विशेषण तथा लड़का विशेष्य है।

वह लंबा है।
इसमें लंबा विशेषण तथा वह विशेष्य है।

—x—

Scanned with CamScanner

# क्रिया

**क्रिया** :- जिस शब्द से किसी काम को करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं।
जैसे- खाना, पीना, खेलना, चलना, पढ़ना आदि

धातु - जिस मूल शब्द से क्रिया का निर्माण होता है, उसे धातु कहते हैं। धातु में "ना" जोड़कर क्रिया बनायी जाती है।
जैसे- पढ़ + ना

क्रिया के भेद :-
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं:-

(क) अकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म न हो या किसी कर्म के रहने की संभावना न हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे- हँसना, रोना, सोना, चलना आदि।
उदाहरण:- प्र० वह क्या रोता है? इसका कोई नतीजा है न उत्तर

(ख) सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म के रहने की संभावना हो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे - खाना, पीना, पढ़ना, लिखना आदि।
उदाहरण -
प्र०- वह क्या खाता है?
उत्तर - वह आम खाता है।
ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है इसमें कर्म रहने की संभावना है। अतः खाना सकर्मक क्रिया है।

Scanned with CamScanner

संरचना (बनावट) के आधार पर क्रिया के भेद —

1. प्रेरणार्थक - क्रिया — जिस क्रिया से इस बात का ज्ञान हो कि कर्त्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को उसे करने के लिए प्रेरित करता है उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
उदाहरण - राम नौकर से कपड़ा धुलवाता है।
अतः - धुलवाता - प्रेरणार्थक क्रिया है।

2. संयुक्त क्रिया - जब दो या दो से अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो वह क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है।
जैसे - मैं खाना खा चुका।
खा + चुका - संयुक्त क्रिया है।

3. सहायक क्रिया :- मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं।
जैसे - हूँ, है, हैं, रहा, रही, रहे, था, थे, थी, थीं आदि
उदाहरण :- मैं खा रहा हूँ। रहा, हूँ, है सहायक क्रिया वह पढ़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया - जब कर्त्ता एक क्रिया को समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया आरंभ करता है, तो पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
जैसे - मैं पढ़कर लिखने लगा।
यहाँ पढ़कर पूर्वकालिक क्रिया है।

Scanned with CamScanner

5. द्विकर्मक क्रियाएँ:- जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - शिक्षक विद्यार्थी को पढ़ाते हैं।
यहाँ एक कर्म है - विद्यार्थी

2. शिक्षक विद्यार्थी को हिन्दी पढ़ाते हैं।
यहाँ दो कर्म हैं - विद्यार्थी और हिन्दी

— x —

## क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण:- जो शब्द क्रिया की विशेषता बताये, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।
जैसे - धीरे-धीरे, तेज, जोर-जोर से आदि।

क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं:-

1. स्थान वाचक — जो क्रिया विशेषण क्रिया के स्थान की स्थिति एवं दिशा का बोध कराये, उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।
जैसे - यहाँ, वहाँ, आगे-पीछे, ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर आदि
उदाहरण - वह यहाँ रहता है। - स्थान की स्थिति का बोध
सड़क के बाएँ चलो। - स्थान की दिशा का बोध।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

2. कालवाचक - जो शब्द क्रिया के काल (समय) संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं। उसे कालवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - आज, कल, अभी-अभी, कभी, सुबह, शाम आदि

उदाहरण - वह अभी आ रहा है। - क्रिया के समय का बोध।
मोहन आजकल खेल रहे हैं। - क्रिया की अवधी का बोध।

3. रीतिवाचक :- जिस क्रियाविशेषण से क्रिया के प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, निषेध आदि का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे - ऐसे, वैसे, कैसे, अतः, जोर-जोर से, धीरे-धीरे आदि

उदाहरण - वह ऐसे लिखता है। - क्रिया के प्रकार का बोध
वह शायद जाए। - क्रिया के अनिश्चय का बोध
मैं नहीं खेलूँगा। - क्रिया के निषेध का बोध

4. परिमाण वाचक - जिस क्रिया विशेषण से क्रिया की न्यूनता, अधिकता, तुलना, मात्रा आदि का बोध हो, उसे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे - इतना, उतना, जितना, कितना, थोड़ा आदि

उदाहरण - वह थोड़ा खाता है। - न्यूनता का बोध
वह बहुत पढ़ता है। - अधिकता का बोध
मोहन कितना सोता है। - तुलना का बोध

Scanned with CamScanner

# व्याकरण

## उपसर्ग + प्रत्यय

उपसर्ग – वह शब्दांश जो किसी मूलशब्द के पहले लगाकर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे उपसर्ग कहते हैं।

जैसे – "जय" शब्द का अर्थ है "जीत"

यदि मूल शब्द – "जय" में उपसर्ग – "परा" लगा दिया जाए तो नया शब्द बना – "पराजय" जिसका अर्थ होगा – हार।

| शब्द | उपसर्ग | मूलशब्द |
|---|---|---|
| पराजय | परा + | जय |
| प्रबल | प्र + | बल |

आदि

प्रत्यय – वह शब्दांश जो किसी मूलशब्द के अंत में लगाकर उसके अर्थ को बदल दे, उसे प्रत्यय कहते हैं।

जैसे –

| | शब्द | मूलशब्द | प्रत्यय |
|---|---|---|---|
| संज्ञा | मित्रता – | मित्र + | ता |
| " | गुरुत्व – | गुरु + | त्व |
| | फलित – | फल + | इत |
| सर्वनाम | मेरी – | मेरा + | ई |
| विशेषण | लघुत्व – | लघु + | त्व |
| " | ऊँचाई – | ऊँचा + | आई |
| सर्वनाम | अपनापन – | अपना + | पन |

P.T.O. →

Scanned with CamScanner

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—

(i) कृत् प्रत्यय — क्रिया या धातु के अंत में जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्यय को लगाने से जो शब्द बनते हैं उसे कृदन्त कहलाते हैं।

जैसे —

पढ़ + आई — पढ़ाई
खेल + आड़ी — खिलाड़ी

(ii) तद्धित प्रत्यय — संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में जुड़नेवाला प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाता है। और इसके मेल से बने शब्द को तद्धितान्त कहते हैं।

उदाहरण —

| संज्ञा | प्रत्यय | बने हुए शब्द |
|---|---|---|
| मित्र | ता | मित्रता |
| मनुष्य | त्व | मनुष्यत्व |

विशेषण —

| | प्रत्यय | |
|---|---|---|
| कम | ई | कमी |
| ऊँचा | आई | ऊँचाई |

सर्वनाम

| | | |
|---|---|---|
| मेरा | ई | मेरी |
| अपना | पन | अपनापन |

Scanned with CamScanner